NOTIFICATION NO – 564/2024

NOTIFICATION DATE – 07-08-2024

NAME – HAROON ANSARI

SUPERVISOR NAME – DR VIVEK DUBEY

DEPARTMENT – HINDI

TOPIC –SAMKALEEN HINDI UPANYASON MEIN CHITRIT KALAKARON KE JEEVAN SANGHARSH KA ALOCHNATMAK ADHYAYAN (VISHESH SANDARBH 1990 SE 2018)

KEYWORDS -: कला, कलाकार, संघर्ष, भूमंडलीकरण, समकालीनता, सृजनात्मकता, द्वंद्व, संवेदना

Findings

कलाकार किसी समाज की संस्कृति के वाहक होते हैं। वह जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म और स्थूल से स्थूल घटनाओं को बहुत गहनता व गंभीरता से देखते हैं। जीवन के विभिन्न अनुभवों की अभिव्यक्ति करके जब वह अपनी कला में उन अनुभवों को जगह देते हैं तब वह कला रचना कई बार दूसरों के अनुभव से जुड़कर उनके भीतर भी रसानुभूति उत्पन्न करती है | कलाकार की इस कला से समाज भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। अपने जीवन के संचित अनुभवों को रचना में उड़ेलकर वह जगत को समर्पित करते हैं। शोध के केन्द्र में जो उपन्यास हैं उनमें साहित्यकारों, चित्रकारों, नर्तकों, संगीतकारों, अभिनेताओं के जीवन संघर्ष की अभिव्यक्ति हुई है। हिन्दी उपन्यासकारों ने इन उपन्यासों में कलाकारों के जीवन के यथार्थ को उजागर किया है। उनकी सृजनात्मकता, उनके संघर्ष, जीवन की विविधि जटिलताएँ, विसंगतियाँ और विडंबनाओं को पूरी ईमानदारी के साथ चित्रित किया है। कलाकार भी मनुष्य है आम व्यक्ति की ही तरह उसकी भी अपनी विभिन्न प्रकार की आवश्यकताएँ हैं। घर, परिवार, समाज आदि भी उसके जीवन को प्रभावित करते हैं लेकिन ये विभिन्न प्रकार की स्थितियाँ उसे आम आदमी के जीवन से भिन्न प्रकार से संघर्ष करने को विवश करती हैं।

समकालीन समय एक संक्रमण का दौर है जिसमें बहुत कुछ पुराना पीछे छूट रहा है बहुत कुछ नवीन को ग्रहण करने की प्रवृत्ति पनप रही है। इस ग्रहण और त्याग के कारण समकालीन समाज में विभिन्न परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्थाओं में बदलाव से जनमानस प्रभावित हो रहा है। इस परिवर्तन का सबसे मुख्य कारण भूमंडलीकरण का प्रभाव है। भूमंडलीकरण के दौर ने जिस तरह समाज को प्रभावित किया है उसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही पक्ष दिखाई देते हैं। समकालीन हिन्दी उपन्यासों ने अपनी तात्कालिकता का परिचय देते हुए विविध विषयों को उठाया है और बड़े ही रोचक औ र यथार्थवादी ढंग से उन्हें प्रस्तुत किया है।

समकालीन समय में कला जगत की जो दशा है वह दयनीय होने के साथ-साथ चिंतनीय भी है आज कलाओं के नाम पर जिस तरह कॉर्पोरेट जगत और पूँजीपति घरानों ने कला के प्रचार-प्रसार का दायित्व अपने कंधों पर लेकर जिस प्रवृत्ति के लिए मार्ग प्रशस्त किया है वह उनके स्वार्थ और बाज़ार के अनुकूल है। कलाओं के संरक्षण की चिंता जिस समाज और सत्ता की होनी चाहिए आज वह उद्योगपतियों की बपौती बन गई है। लोक कलाएँ हों या शास्त्रीय कलाएँ आज वे जिस उपेक्षा के दौर से गुज़र रही हैं वह चिंता का विषय है।

कलाओं के नाम पर जिस प्रकार की भौंडी कला का प्रदर्शन हो रहा उसका कला से दूर-दूर का संबंध नहीं हैं। किसी समाज व देश की पहचान उसकी संस्कृति और कला से होती हैं यदि उनका भविष्य संकट में हो तो देश की अस्मिता को भी खतरा है। किन्तु आधुनिक प्रौद्योगिकी और पाश्चात्य प्रभाव ने कलाओं का कल्याण कम किया है बल्कि उन्हें क्षति ही अधिक पहुँचाई है। किसी कला का मौलिक रूप जब किसी बाह्य प्रभाव से आक्रांत हो जाए तब उस कला की अपनी जड़ें डगमगाने लगती हैं।